८६ - जीने का प्रमाण

०४-०७-२०१३

भ्रमपूर्वक जीने से प्रमाण बनता नहीं | अभी तक जो सफलता रही, जीवों से अच्छा जीने के लिये रहा | जीवों से अच्छा जीते हुये मतभेद के चंगुल में आ गये | समुदाय चेतना में जी गये | एक से एक देश, एक से एक समुदाय अपने अच्छाई को बताने में लगा है, धर्म और राजनीति के रूप में | धर्मनीति रहस्य में फंस कर बे-असर हो गया | राजनीति मतभेदों में फंस कर समस्या में फंसता गया | सर्वप्रथम इतिहास के अनुसार राजनीति व्यक्तिवादी हुआ | राजा जो कहा वह कानून हुआ | उसके बाद अमात्य आ गये | उसके बाद पंचायत हो गया, सभा हो गया | इतना परिवर्तन होते हुए भी समाधान मिला नहीं | इस विधि से राजनीति समस्या में फंस कर दिशाविहीन होना स्पष्ट है | हर देश दूसरे देश का शोषण में लगा है | जो नहीं लगा है वो सब पिछड़े हुए हैं | जो शोषण करते हैं वो आगे बढे हैं | इस ढंग से अनाचार, अत्याचार, भ्रष्टाचार बढ़ रहा है | राजनीति का मतलब इन तीनों प्रकार के प्रलोभनों से फंसना ही है | इसी का प्रतिरूप में हर मानव जीना चाहता है | मानव के साथ यह प्रकाशित हुआ कि लाभोन्माद, भोगोन्माद, कामोन्माद के रूप में, लाभोन्माद के आधार पर संघर्ष और युद्ध प्रवृत्तियां पनपीं | इस बीच में व्यापार और खेल प्रलोभन का आधार हुआ |

प्रलोभन का प्रकटन लाभोन्माद के रूप में ही हुआ | इस ढंग से मानव अपराध और भ्रम में फंसने का आधार हुआ | मानव जात अभी की स्थिति में ज्ञानी, विज्ञानी, अज्ञानी के रूप में ही गण्य है | ये तीनों भ्रम और अपराध में फंस चुका है | इसलिये ज्ञानोदय आवश्यक है | ज्ञानोदय का स्वरूप विकसित आचरण ही है | विकसित आचरण प्रमाण रूप में अनुभव प्रमाण, विचार प्रमाण, व्यवहार-कार्य प्रमाण होना ही जागृति है | चेतना जागृति होती है | चैतन्य प्रकृति में ज्ञानावस्था में मानव गण्य है | विकल्प के अनुसार मानव ही इसको छोड़कर अर्थात ज्ञान को छोड़कर भ्रम में अपराध में फंस गया | ज्ञानी, विज्ञानी, अज्ञानी तीनों को अपराध और भ्रम में फंसने का शिक्षा और राजनैतिक विधि से व्यवस्था सभी देशों में प्रचलित है | इस ढंग से राजनीति निरर्थक होना समझ में आता है, सार्थक नहीं हुआ | अपराध युद्ध के रूप में होना बहुत पीछे से है | यह शनैःशनैः लाठी से चला हुआ, पत्थर से चला हुआ युद्ध आज मिसाइल तक पहुँच गया | इन सब अवस्था से देखने पर मानव जात इस धरती पर रहने योग्य नहीं है, इस प्रकार कह रहा है |

खाली स्थान में गाँव बसाने की बात कह रहा है अर्थात मंगल और चंद्रमा में गाँव बसाने की बात सोच रहा है | यदि बसा भी लिया तो भोजन कहाँ से लाएगा, इस ढंग से, धरती से सम्बंध रखना ही पड़ेगा | इस विधि से हम क्या करें? यही प्रश्न आता है | इसका उत्तर यही है कि हर व्यक्ति समझदार हो | तीनों प्रमाण सम्पन्न हो जिससे शांतिपूर्वक मानव इस धरती पर जी सके | इसको भली प्रकार से शोधा है, जांचा है, जिया है | जीने में कोई तकलीफ नहीं है | समाधान, समृद्धि, अभय,सहअस्तित्व पूर्वक जीने में कोई तकलीफ नहीं है |

इसका प्रतिकार होता नहीं | हर व्यक्ति में स्वीकार होता है | इसी के साथ-साथ नियम, नियंत्रण, संतुलन, न्याय, धर्म, सत्य पूर्वक जीना बनता है | इसी क्रम में न्याय, धर्म, सत्यपूर्वक जीना बनता है | फलस्वरूप मानव सुख, शांति, संतोष, आनंदपूर्वक जी सकता है | ऐसा विचार सम्मत विधि से जीने पर स्वधन, स्वनारी/स्वपुरुष, दयापूर्ण कार्य-व्यवहार बनता है | इस प्रकार जीने में मानव संघर्ष और युद्ध मुक्ति होना स्वाभाविक है | संघर्ष और युद्ध मुक्ति होने से धरती बिगड़ने का कार्यक्रम खत्म | आचरण को नियम कहा है | मनुष्येतर तीनों अवस्था में आचरण ठीक है | मानव का आचरण अभी तक बना ही नहीं | मानव का आचरण जागृत चेतना विधि से ही बनता है | इसी का नाम है नियम, नियंत्रण,सन्तुलन, न्याय, धर्म, सत्य |

जय हो, मंगल हो, कल्याण हो |

- **ए. नागराज | प्रणेता एवं लेखक | मध्यस्थ दर्शन (सह-अस्तित्ववाद) | दिव्य पथ संस्थान(भजनाश्रम) | अमरकंटक | जिला-अनूपपुर(म. प्र.)**